श्री हनुमान चालीसा

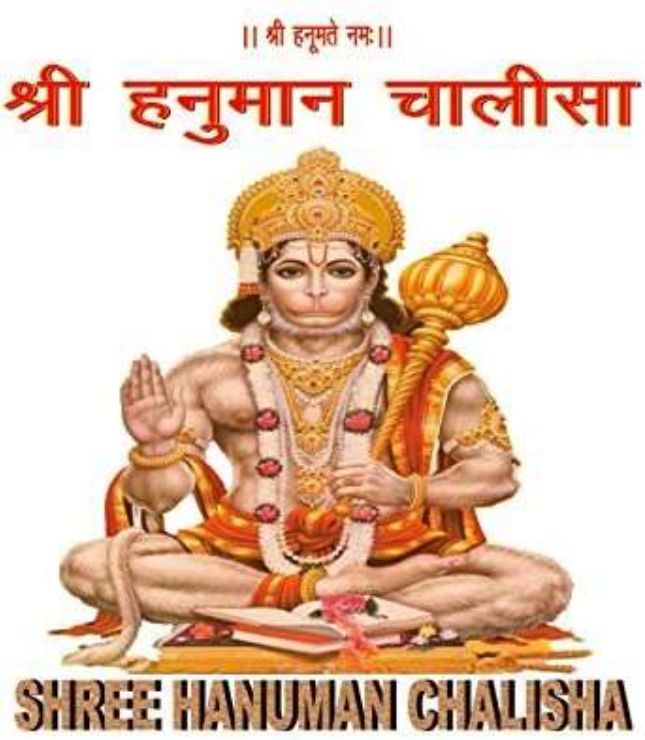

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि । बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ।।
बुद्धिहीन जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार । तनु बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ।।

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुं लोक उजागर ।

रामदूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ।।

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।

कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ।।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै कांधे मूंज जनेऊ साजै ।

संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।

विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ।

भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचंद्र के काज संवारे ।।

लाय सजीवन लखन जियाये श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ||

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ।।

जम कुबेर दिगपाल जहां ते कबि कोबिद कहि सके कहां ते।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा । ।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ।

जुग सहस्र जोजन पर भानू लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।

दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।

राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डर ना । ।

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हांक तें कांपै ।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ।।

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।

संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।

सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ।

और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ।।

चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।

साधु-संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे । ।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ।

राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।।

तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ।

अन्तकाल रघुबर पुर जाई । जहां जन्म हरि-भक्त कहाई ।।

और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।

संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।

जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ।

जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ।।

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा।

तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मंह डेरा । ।

॥ दोहा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।